भारतीय इतिहास

के कुछ विषय भाग - 1

विचारक, विश्वास और इमारतें

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

CLASSES AVAILABLE :-

6th to 10th

Maths Science English Sst

11th & 12th

Pol. Science History

Economics Accounts Maths English sociology

C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi - 110041

M H Rabbani : 8700467219

(Chief Mentor & Coordinator)

@vidyadrishti

भारतीय उपमहाद्वीप की सामाजिक और धार्मिक स्थिति (6 ठी शताब्दी ईसा पूर्व)

👉 प्रारंभ में वैदिक (आर्य) धर्म और समाज इतना जटील नहीं था और उस समय लोगों में समानता की भावना थी।

👉 परंतु छठी शताब्दी ई० पू० तक इसमें अनेक दोष आ गये थें , जिसके कारण जैन तथा बौद्ध जैसे नए धर्मों का उदय हुआ ।

(1) कर्मकांड :-

- प्राचीन वैदिक धर्म बहुत सादा था परंतु अब उसमे कई निरर्थक कर्मकाण्ड शामिल हो गये थे।

(2) खर्चीला धर्म :-

- चूंकि कर्मकाण्ड बहुत महंगा था इसलिए उनका पालन करना समान्य लोगों के लिए कठिन हो गया था।

(3) पशु बली :-

- यज्ञ में किये जाने वाले पशुबली को कुछ लोग नापसंद करते थें ।

(4) जाति प्रथा :-

- ब्राह्मणों द्वारा निर्धारित जाति प्रथा के नियम कठोर तथा अमानवीय हो चुके थे।
- शुद्रों को अछूत समझ कर दुर्व्यवहार किया जाता था जिससे लोगों की भावना को ठेस पहुंची।

(5)ब्राह्मणों का भ्रष्ट जीवन :-

- ब्राह्मण एवं पूजारी ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने वाले लालची स्वं चरीत्रहीन हो चुके थें ।

(6) कठिन संस्कृत भाषा :-

- वर्ग व्यवस्था एव जाति प्रथा के कारण वेदों को पढ़ने का अधिकार न होने के कारण लोग, अशिक्षित रह जाते थें। अत: ये लोग न तो वेदों को समझते थें और न ही वेदों को पसंद करते थें

🔴 **निष्कर्ष :-** वस्तुत: उपरोक्त परिस्थितियों में बौद्ध एवं जैन धर्म का उदय हुआ ।

उपनिषद

- **आर्यों का**
  - दर्शन
  - धार्मिक एवं अध्यात्मिक सिद्धांत का वर्णन
  - संख्या 108
- **जानकारी**
  - प्राचीन आर्यों के धार्मिक एवं सामाजिक अवस्था का
  - प्राचीन आर्यों के दर्शन का
- **विरोध**
  - कर्मकांड का
- **रहस्यों का अर्थ**
  - आत्मा - परमात्मा
  - मोक्ष
  - कर्म, माया
  - प्रकृति और सृष्टि

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By - M H Rabbani

नियतिवादी और भौतिकवादी

(1) नियतिवादी या भाग्यवादी :-

- आजीविक परंपरा के लोग
- नेता मक्खलि गोसाल
- सबकुछ पहले से निर्धारित
- सुख और दु:ख की मात्रा पहले से निर्धारित ।

(2) भौतिकवादी :-

- लोकायत परंपरा के लोग
- नेता अजीत केसकंबलिन
- पुर्नजन्म नहीं होता सबकुछ मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाता है
- मनुष्य चार तत्वों से बना होता है और मरने पर -
  - (a) मिट्टी वाला अंश - पृथ्वी में
  - (b) जल वाला अंश - जल में
  - (c) गर्मी वाला अंश - आग में
  - (d) साँस वाला अंश - वायु में
  - (e) इंद्रिया - अंतरिक्ष में मिल जाती है
- इसके नेता के अनुसार दान मूर्खों का सिद्धांत है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By - M H Rabbani

(3) उपनिषद के दार्शनिकों के विचार :-

- कर्म सिद्धांत पर बल
- अच्छे बुरे कर्मों का फल अवश्य मिलेगा।
- कर्मों का फल कई जन्मों तक भुगतना पड़ता है।

निष्कर्ष :-

👉 उपनिषद के विचार, कर्म सिद्धांत और पुर्नजन्म पर बल देते हैं।
👉 नियतिवादी सब कुछ पूर्व निर्धारित मानते हैं।
👉 भौतिकवादी मृत्यु के साथ सब कुछ समाप्ती की बात करते हैं।

ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दि का काल विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़

👉 ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दि का काल विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है। इसके कारण निम्नलिखित हैं :-

(1) महान चिंतकों का उदय :-

- ईरान ➖ जरथुस्त्र
- चीन ➖ खुगत्सी
- यूनान ➖ सुकरात, प्लेटो, अरस्तु
- भारत ➖ महावीर, बुद्ध और अन्य चिंतकों का उद्भव हुआ।

👉 इन्होंने जीवन के रहस्यों को समझाने का प्रयास किया।

(2) वेदों के प्रभुत्व पर प्रश्न :-

👉 महावीर और बुद्ध जैसे शिक्षकों ने वेदों के प्रभुत्व पर प्रश्न उठाए।
👉 इन्होंने यह भी माना कि जीवन के दुखों से मुक्ति का प्रयास हर व्यक्ति स्वयं कर सकता है। यह समझ ब्राह्मणवाद से भिन्न थी क्योंकि ब्राह्मणवाद के अनुसार किसी व्यक्ति का अस्तित्व उसकी जाति और लिंग से निर्धारित होता था।
👉 इन्होने भारत के समाजिक और धार्मिक जीवन की काया पलट दी।

(3) नए राज्य और शहरों का उदय :-

👉 यही वह समय था जब गंगा घाटी में नए राज्य और शहर उभर रहे थे और सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में कई तरह के बदलाव आ रहे थे।
👉 इनमें सबसे प्रमुख आरंभिक राज्यों, साम्राज्यों और रजवाड़ों का विकास है।
👉 छठीं से चौथी शताब्दी ई. पूर्व में मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया। इसके पीछे कारण खेती में उन्नति और लोहे की खदानें होना था।
👉 भारत एवं विश्व में कई राज्य एवं शहरों का उदय हुआ।

(4) कृषि विकास

👉 कृषि में उन्नति हुई और नए नगरों का उदय हुआ।
👉 खेती की नई तकनीकों का विकास हुआ।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

(5) साम्राज्य और सरदारियों का उदय

👉 इसी समय भारत में मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई।

👉 उपमहाद्वीप के दक्कन और उससे दक्षिण के क्षेत्र में स्थित तमिलकम में चोल, चेर और पाण्ड्य जैसी सरदारियों का उदय हुआ। ये राज्य बहुत ही समृद्ध और स्थायी सिद्ध हुए।

यज्ञ की परम्परा

(a) ऋगवेद (1500-1000 BC) अग्नि, इंद्र, सोम आदि कई देवताओं के स्तुतिगान का संग्रहण है।
(b) यज्ञों के वक्त इन स्रोतों को पढ़ा जाता था।
(c) यज्ञ में लोग मवेशी, पुत्र, लंबी उम्र, स्वास्थ्य की प्रार्थना करते थे।
(d) प्रारंभ में यज्ञ सामूहिक रूप से होता था। बाद में परिवार के स्वामीयों के द्वारा किया जाने लगा।
(c) सरदार एवं शासक राजसूय और अश्वमेघ जैसे कठिन यज्ञ किया करते थे।

महात्मा बुद्ध

- **जन्म :-** 567 ई० पू० नेपाल के **लुम्बिनी**
- **मृत्यु :-** 80 वर्ष की आयु में मृत्यु 487 ई० पूर्व **कुशीनगर** में हुई।
- **पिता :- शुदोद्धन**,शाक्य वंश कपिलवस्तु के राजा
- **माता :- महामाया** लेकिन पालन पोषण **उपमाता गौतमी** ने किया।
- **विवाह :-** 18 या 19 वर्ष की आयु में **यशोधरा** के साथ विवाह,पुत्र राहुल

महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित स्थान

- लुम्बिनी — जन्म
- कपिलवस्तु — पालन पोषण
- राजगृह — गृह त्याग के बाद सबसे पहले गयें।
- बोधगया — महाज्ञान की प्राप्ति
  महाबोधी मंदिर
  बुद्ध या ज्ञानी कहा जाने लगा
- सारनाथ — प्रथम उपदेश (धर्मचक्र परवर्तन)
  पाँच शिष्य (पाँच बड़े)
- कुशीनगर — मृत्यु (निर्वाण प्राप्त)

By - M H Rabbani

👉 सिद्धार्थ ने चार दृश्य देखे जिन्होने उनके मन को बहुत अधिक प्रवाहित किया और अंततः तीस वर्ष की आयु मे गृह त्याग कर ज्ञान की प्राप्त के लिए जंगल मे चले गए। इस घटना को ही 'महान त्याग' के नाम से जाना जाता है।

👉 घर से निकल कर सबसे पहले वे मगध की राजधानी राजगृह गए लेकिन वहाँ उन्हे वास्तविक शांति नही मिली। इसके बाद गया के निकट एक पीपल वृक्ष के नीचे समाधि लगा कर बैठ गए जहाँ उन्हे ज्ञान की प्राप्ती हुई। उसी समय से उन्हें बुद्ध अथार्थ ज्ञानी कहा जाने लगा। वर्तमान में इस जगह महाबोधि मंदिर है।

👉 बनरास के पास सारनाथ में उन्होने अपना पहला उपदेश दिया जिसे 'धर्मचक्र प्रवर्तन कहते है। यहाँ पाँच व्यक्ति उनके शिष्य बने जिन्हें पाँच च बड़े कहा जाता है। 80 वर्ष की आयु में 487 ईसा पूर्व को कुशी नगर के स्थान पर उनकी मृत्यु हुई।

चार दृश्य

👉 अपने सार्थी छाना के साथ घूमते-घूमते सिद्धार्थ ने एक के बाद एक चार दृश्य देखें जिनसे प्रभावित होकर सिद्धार्थ ने ज्ञान की प्राप्ति के लिए 30 वर्ष की आयु में गृह त्याग दिया। इसे **महान त्याग** के नाम से जाना जाता है।

(1) प्रथम दृश्य :- एक व्यक्ति का था जिसे घर वालों ने बाहर निकाल दिया था।

(2) दुसरा दृश्य :- एक बिमार व्यक्ति का था जो पीड़ा से मरा जा रहा था।

(3) तीसरा दृश्य :- एक मृतक का था जिसके घर वाले जोर-जोर से रो रहे थे।

(4) चौथा दृश्य :- एक सन्यासी का था जो गृह त्याग कर बड़ी मस्ती में घुम रहा था।

बौद्ध धर्म के मुख्य सिद्धांत/महात्मा बुद्ध की शिक्षाएँ

👉 महात्मा बुद्ध की शिक्षाएं बहुत ही सरल तथा व्यावहारिक जीवन से संबंधित है जिनमे आत्मा-परमात्मा जैसे पेचिदा रहस्यो का वर्णन नहीं है।

👉 उन्होने शुद्ध एवं पवित्र जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया।

👉 उनके द्वारा दी गई शिक्षाएं निम्नलिखित हैं :-

(1) चार आर्य सत्य :-

- संसार दुखों का घर है।
- दुख लालसा से पैदा होता है।
- लालसा का दमन करने से दुख दूर हो जाता है।
- लालसा का दमन अष्ट मार्ग पर चलकर हो सकता है।

By - M H Rabbani

(2) अष्ट मार्ग :-

- इसे मध्यम मार्ग भी कहा जाता है।
- यह बौद्ध धर्म के शिक्षाओं का सारांश है।

(3) अहिंसा :-

- जीव हत्या तथा मांस सेवन का विरोध

(4) कर्म सिद्धांत :-

- कर्म का फल अवश्य मिलता है।
- पिछले जन्म के कर्म के अनुसार वर्तमान जीवन निर्धारित होता है।

(5) निर्वाण :-

- जीवन का मूल उद्देश्य

(6) समानता तथा नैतिकता :-

- भाइचारे की भावना पर बल
- उच्च-नीच का विरोध
- नैतिक जीवन की प्रेरणा

(7) ईश्वर की पूजा में अविश्वास :-

- ईश्वर के बारे में मौन।
- ईश्वर या देवताओं की पूजा में विश्वास नहीं।

(8) तपस्या में अविश्वास :-

- निर्वाण प्राप्ति के लिए कठोर तपस्या तथा शारीरिक कष्ट देने में विश्वास नहीं।

(9) कर्मकाण्डों का विरोध :-

- बली, मंत्रो का उच्चारण एवं अन्य कर्मकाण्डों में विश्वास नहीं।

🔴 वस्तुतः महात्मा बुद्ध का धर्म कठोर नियमों और पूजा पद्धतियों का संग्रह नहीं है, बल्कि शुद्ध एवं पवित्र जीवन बिताने का एक मार्ग है।

अष्ट मार्ग या मध्यम मार्ग

अष्टमार्ग आठ सिद्धांतों का समूह है जो निम्नलिखित हैं :-

(1) सम्यक दृष्टि - इसके द्वारा मनुष्य पाप और पुण्ण, सत्य और असत्य, सदाचार और कदाचार में भेद कर सकता है।

(2) सम्यक वचन - सदा सत्य बोलना चाहिए और वाणी में नम्रता एवं मधुरता होनी चाहिए।

(3) सम्यक संकल्प- विलासिता को छोड़कर ईण्या, द्वेष और हिंसा नहीं करनी चाहिए ।

(4) सम्यक कर्म - मनुष्य को सदा अच्छा कर्म करना चाहिए।

(5) सम्यक आजीविका - ईमानदारी से आजीविका कमानी चाहिए।

(6) सम्यक प्रयत्न - मनुष्य को सदा अच्छे प्रयास करने चाहिए। इसमें इंद्रियों पर संयम, बुरी भावनाओं का त्याग, अच्छी भावनाओं को अपनाने का प्रयास इत्यादि शामिल है ।

(7) सम्यक स्मृति - मनुष्य को हमेशा अच्छी बातें याद रखनी चाहिए।

(8) सम्यक समाधि - यह चित (मन) की एकाग्रता से संबंधित है।

● **निष्कर्ष :-**

👉 मनुष्य को न तो भोग विलास का जीवन व्यतीत करना चाहिए और न ही कठोर तपस्या द्वारा शरीर को कष्ट देना चाहिए।

👉 बुद्ध के अनुसार शुद्ध नैतिक जीवन व्यतीत करने से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

बौद्ध संघ

👉 बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में बौद्ध संघ की महत्वपूर्ण भूमिका है।

👉 बुद्ध के शिष्य दो प्रकार के थे।

(i) भिक्षु - गृह त्याग कर सन्यास

(ii) उपासक - गृहस्थ जीवन

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By - M H Rabbani

👉 बौध संघ में प्रवेश के नियम :-

(a) न्यूनतम आयु 15 वर्ष

(b) भिक्षु बनने के लिए माता पिता से अनुमति जरूरी।

(c) दास, ऋणी(कर्जदार), चोर, अपराधी, रोगी इत्यादि सदस्य नहीं बन सकते थे।

(d) प्रवेश में जाति प्रथा आधारित कोई भेद भाव नहीं था।

👉 संघ में प्रवेश के लिए शपथ :-

संघ में प्रवेश लेने से पहले सदस्य को सभापति के सामने पिला वस्त्र धारण कर शपथ लेना पड़ता था कि -

"मै बुध की शरण लेता हूँ
मै धर्म की शरण लेता हूँ
मैं संघ की शरण लेता हूँ"

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

👉 संघ में प्रवेश से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य :-

(a) आनंद नामक प्रिय शिष्य के आग्रह पर महिलाओं को संघ में शामिल होने की अनुमति ।

(b) बुद्ध की उपमाता महाप्रजापति गौतमी संघ की सदस्य बनने वाली प्रथम महिला । बाद में वह थेरी बनी और निर्वाण प्राप्त की।

(c) संघ में प्रवेश पाने वाली स्त्रीयों को भिक्षुणी कहा जाता था जिन्हें 8 कठोर शर्तों का पालन करना होता था।

(d) भिक्षु और भिक्षुणीयों 3 वस्त्र धारण करते और भिख माँग कर पेट भरते थे तथा वर्ष में 9 महिने घुम - घुम कर बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे।

(e) संघ के नियमों का पालन न करने वाले को दंड या संघ से निकाल दिया जाता था।
(f) संघ का संचालन लोकतांत्रिक परंपराओं के आधार पर होता था।

बौद्ध धर्म के प्रसार / उन्नति के कारण

👉 बौद्ध धर्म बहुत बहुत कम ही समय में भारत के एक बहुत बड़े भाग तथा भारत से बाहर चीन,कोरिया तिब्बत , म्यांमार, श्रीलंका और जापान इत्यादि देशो में फैल गया।

👉 इसके इतने कम समय में लोकप्रिय होने के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे:-

(1) अनुकूल समय - ऐसे समय में इसका उदय हुआ जब भारत धार्मिक सुधार एवं परिवर्तनों की आवश्यकता महसुस कर रहा था। अत: जब बुद्ध ने सुधारों के लिए आवाज उठायी तो लोग उनके साँथ होते गयें ।

(2) आकर्षक व्यक्तित्व :- चूकि बुद्ध त्याग, भलाई और सच्चाई के प्रतिक बन चुके थें। अत: लोग उनकी ओर आकर्षित हुए।

(3) सरल उपदेश - उपदेश या सिद्धांत बहुत सरल

(4) **सरल भाषा - प्र**चार-प्रसार में संस्कृत जैसे कठीन भाषा की जगह आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया।

(5) **जाति प्रथा का आभाव - ऊच**-नीच, जाति- पाति न होने के कारण हिन्दु धर्म की निम्न जातियाँ इसकी ओर आकषिर्त हुई। इसमें निरर्थक कर्मकाण्ड, यज्ञ या बली जैसी प्रथाओं का आभाव था।

🔴 **निष्कर्ष :-**

👉 वस्तुत: बौद्ध धर्म का तेजी से प्रचार प्रसार उनके सरल होने के कारण हुआ जिसमें अशोक, कनिष्क और हर्षवर्धन जैसे शासकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

👉 तक्षशीला, नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों की भूमिका भी महत्वपूर्ण थी ।

बुद्ध के जीवन काल में तथा उनकी मृत्यु के बाद भी बौद्ध धर्म का प्रसार

बुद्ध के जीवनकाल में और उनकी मृत्यु के पश्चात् भी बौद्ध धर्म तेजी से फैला। इसके निम्नलिखित कारण थे-

(i) राजाओं की सहायता :-

- सम्राट असोक और कनिष्क के प्रयत्नों से बौद्ध धर्म लंका, चीन, मंगोलिया तथा अन्य देशों में फैला।

(ii) आसान शिक्षाएँ :-

- बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ सरल थीं। उनका पालन करना साधारण व्यक्ति के लिए आसान था।

(iii) समकालीन धर्मों में अप्रिय प्रथाओं का होना :-

- उस समय समकालीन धर्मों, जैसे हिन्दू धर्म की प्रथाओं से जनसाधारण तंग आ चुका था।
- खर्चीले रोति-रिवाजों द्वारा ब्राह्मण लोगों का शोषण करते थे।

(iv) समानता का व्यवहार :-

- बौद्ध धर्म में सबको समानता की दृष्टि से देखा जाता था। हिन्दू धर्म की तरह जाति प्रथा का इस धर्म में कोई स्थान नहीं था।
- इसमें अच्छे आचरण और मूल्यों को महत्त्व दिया गया। इसलिए जनसाधारण व निम्न जातियों के लोग इस ओर शीघ्र ही आकर्षित हो गए। क्योंकि एक बार बौद्ध धर्म को अपनाने के पश्चात् सबको बराबरी की दृष्टि से देखा जाता था।
- स्वयं से छोटे और कमजोर लोगों की तरफ मित्रता का और करुणा के भाव को महत्त्व देने के आदर्श अधिक लोगों को पसन्द आए और वे बौद्ध धर्म में सम्मिलित हो गए।

By - M H Rabbani

जातक कथाएँ

👉 **विषय वस्तु :-**

- राजा एवं प्रजा संबंध
- जातको की विषय-वस्तु राजा एवं प्रजाओ से संबंधित है कि किस प्रकार एक कुटिल राजा की प्रजा दुखी रहती थी।
- राजा अपने प्रजा के बीच पहचान बदल कर जाते थे ताकि वह अपने प्रती प्रजा की राय जान सके।
- डकैतों और कर से बचने के लिए लोग गाँव छोड़ कर जंगल में बस गयें थें।

👉 **भाषा :- पाली**

👉 **कुल संख्या :- 549**

👉 **कथाएँ :-** महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ

👉 **जानकारी :-**

- समकालीन लोगों के जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में।
- इन कहानीयो से पता चलता है कि महात्मा बुद्ध जाति प्रथा के खिलाफ थे और अपने उद्देश्यो की प्राप्त के लिए निच कर्म को बहुत बुरा मानते थे।

बौद्ध दर्शन

(a) विश्व अनित्य है और लगातार बदल रहा है। यहाँ कुछ भी स्थायी या शास्वत नहीं है।
(b) इस क्षणभंगुर दुनिया में दुःख मनुष्य का अंतर्निहित तत्व है।
(c) घोर तपस्या और विलासिता के बीच मध्य मार्ग अपना कर मनुष्य दुखों से मुक्ति पा सकता है।
(d) समाज का निर्माण मनुष्यों ने किया है न कि ईश्वर ने। अतः व्यक्तिगत प्रयास से सामाजिक परिवेष को बदला जा सकता है।
(e) जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति, आत्म ज्ञान और निर्वाण के लिए व्यक्ति केंद्रित हस्तक्षेप और सम्यक कर्म की जरूरत है।
(f) निर्वाण का अर्थ अहम एवं इच्छा का खत्म होना।
(g) बुद्ध का शिष्यों के लिए अंतिम निर्देष -
अपने लिए खुद ही ज्योति बनो क्योंकि तुम्हे खुद ही अपनी मुक्ति का रास्ता ढूंढ़ना है।

🔴 निष्कर्ष :-

👉 उपरोक्त बौद्ध दर्शन या बुद्ध की शिक्षाओं को सुत्त पीटक की कहानियो के आधार पर पुनः निर्मित किया गया है।

👉 उपर्युक्त शिक्षाओं से स्पष्ट होता है कि बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं में अच्छे आचरण और मूल्यों को महत्त्व दिया। उनके अनुसार घोर तपस्या और भोग विलास के बीच का मध्यम मार्ग या अष्ट मार्ग अपनाकर मनुष्य संसार के दुःखों से मुक्ति पा सकता है। इसके लिए मनुष्य के विचार, आजीविका, दृष्टि आदि शुद्ध होने आवश्यक हैं।

प्रारम्भिक बौद्ध मत के अनुसार निर्वाण प्राप्ति

👉 महात्मा बुद्ध कठोर तपत्स्याय के विरुध थे। उन्होने कठोर तपस्या और विलासित के बीच मध्यम मार्ग को चुनने का उपदेश दिया।

👉 महात्मा बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति के लिए 10 शिलों (गुण या आचरण) के पालन करने पर बल दिया जो निम्नलिखित है:-

By - M H Rabbani

(i) अहिंसा
(ii) सत्यं
(iii) अस्तेय
(iv) अपरिग्रह
(v) ब्रह्मचार्य
(vi) नृत्यगान का त्याग
(vii) सुगंधित द्रव्य का त्याग
(viii) असमय भोजन का त्याग
(ix) कोमल सैय्या का त्याग
(x) कामिनी कंचन का त्याग

By - M H Rabbani

👉 ये सभी व्यक्तिगत प्रयास पर अधारित' थे।
👉 महात्मा बुद्ध ने कर्म सिद्धांत पर बल दिया। उनका विचार था कि प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है।
👉 इसलिए शुरू मे निर्वाण प्राप्ति के लिए व्यक्तिगत प्रयास पर ज्यादा बल दिया गया।

बौद्ध ग्रंथों की रचना और संरक्षण

👉 महात्मा बुद्ध के जीवनकाल में उनकी मौखिक शिक्षाओं को नहीं लिखा गया।
👉 उनकी मृत्यु के पश्चात् वैशाली की सभा में उनकी शिक्षाओं को संकलित करके **त्रिपिटक** का निर्माण किया गया।
- **विनय पिटक :-** संघ या बौद्ध मठों में रहने वाले लोगों के लिए नियमों का संग्रह
- **सुत्त पिटक :-** बुद्ध की शिक्षाएँ और उपदेश
- **अभिधम्म पिटक :-** बौद्ध दर्शन

👉 श्रीलंका में बौद्ध धर्म के प्रचार के पश्चात् **दीपवंश** (द्वीप का इतिहास) और **महावंश** (महान इतिहास) लिखे गए।
👉 पूर्व एशिया में फैलने के पश्चात् फा-शिएन और श्वैन-त्सांग भारत यात्रा के दौरान बौद्ध ग्रन्थों को चीन ले गए,जहाँ उनका अनुवाद किया गया।
👉 बौद्ध पांडुलिपियाँ काफी समय तक विभिन्न बौद्ध विहारों में संरक्षित थीं। अब पालि संस्कृत, चीनी और तिब्बती भाषाओं में लिखित ग्रन्थों के आधुनिक अनुवाद तैयार किए गए हैं।

बौद्ध भिक्षुओं और भिकखुनियों के लिए नियम

(1) जब कोई भिक्खु एक नया कंवल या गलीचा बनाएगा तो उसे इसका प्रयोग कम से कम छः वर्षों तक करना होगा।
(ii) यदि कोई भिक्खु किसी गृहस्थ के घर जाता है और उसे टिकिया या पके अनाज का भोजन दिया जाता है तो यदि उसे इच्छा हो तो वह 2 से 3 कटोरा भर स्वीकार कर सकता है। यदि वह इससे ज्यादा स्वीकार करता है तो उसे अपना 'अपराध' स्वीकार करना होगा।
(iii) यदि कोई भिक्खु संघ के किसी बिहार में ठहरा हुआ है प्रस्थान से पहले अपने द्वारा बिछाए गए या बिछवाए गए बिस्तरे को न ही समेटता है न ही समेटवाता है या यदि वह बिना विदाई लिए चला जाता है तो उसे अपराध स्वीकार करना होगा।
👉 उपरोक्त नियम विनय पीटक में दिये गयें हैं।
👉 जन्म - मरण के चक्र से मुक्ति, आत्म - ज्ञान और निर्वाण की प्राप्ति के लिए ये नियम बनाए गयें थें।
👉 संघ बुद्ध के शिष्यों की संस्था थी।

बौद्ध धर्म में विभाजन

👉 बुद्ध की मृत्यु कै बाद कुछ समय तक भिक्षुओं ने बड़ा पवित्र जीवन व्यतित किया ।
👉 परंतु धीरे-धीरे इन्होंने संघ के नियमों की अवहेलना करनी शुरू कर दी।
👉 कुछ भिक्षुओं को लगने लगा कि बुद्ध के नियमों का पालन करना बहुत कठीन है।
👉 इसप्रकार बौद्ध धर्म के अनुयायीयों के बीच मतभेद पैदा होने लगा।
👉 यही मतभेद इतना बढ़ गया कि प्रथम शताब्दी ई० में बौद्ध धर्म दो संप्रदाय में बट गया
(1) हिनयान :- मूल धर्म को मानने वाले (2) महायान :- नवीन धर्म या बाद वाले

हिनयान और महायान संप्रदायों में प्रमुख अन्तर

(1) मूर्ति पूजा : -

- महायान मत वाले बुद्ध को देवता मानकर उनकी पत्थर की मूर्तिया बना कर पूजा करने लगे।
- जबकि हीनयान मत वाले बुद्ध को केवल महान मनुष्य मानते थें और मूर्ति पूजा का विरोध करते थें।

(2) तर्क के सिद्धांत पर विश्वास :-

- महायान वाले विश्वास और पूजा पर ज्यादा बल देते थे जबकि हीनयान मत वाले व्यक्तिगत प्रयत्न और अच्छे कर्मों पर जोर देते थे।
- हीनयान वालों का मानना था कि जब कर्मों के फल से देवता नही बच सके तो उनकी पूजा का क्या लाभ

(3) भाषा :-

- महायान मत वालों ने अनेक पुस्तकें संस्कृत भाषा में भी लिखी
- जबकि हिनयान मत वालों की सभी पुस्तकें पाली भाषा में है।

(4) बौद्ध भिक्षुओं की उपासना :-

- महायान मत वालों ने बुद्ध के साथ - साथ प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षुओं की भी मूर्तियां बनाकर पूजा करने लगें
- जबकि हिनयन सम्प्रदाय में ऐसा नहीं था।

(5) निर्वान की अपेक्षा स्वर्ग पर बल :-

- महायान मत वाले हिन्दुओ की तरह लोगो को स्वर्ग का ललाच देने लगे
- जबकि हीनयान मत वाले निर्वान पर बल देते थे।

● निष्कर्ष :- वस्तुतः महायान मत वालो ने हिन्दु देवी-देवताओं की तरह महात्मा बुद्ध की मूर्ति को फल-फूल चुढ़ाने लगे और इस प्रकार धीरे-2 बौद्ध धर्म और हिन्दु में कोई विशेष अंतर नही रहा जिसके परिणामस्वरूप धीरे-धीरे बौद्ध धर्म हिन्दु धर्म मे विलिन सा हो गया।

बौद्ध धर्म का भारत के लोगों पर प्रभाव

(1) धार्मिक जीवन पर प्रभाव

- जाति-पाती, उच्च-नीच का विरोध करके धार्मिक एकता की भावना पर बल।
- बौद्ध धर्म एवं हिंदु धर्म में मतभेद से विभिन्न संप्रदायों का उदय।
- भक्ति भावना को बल मिला।
- बौद्धों को देखकर हिन्दू समाज भी सुंदर - सुंदर मंदिर बनवाने लगा।
- हिन्दू धर्म के अनुयायीयों को अपनी बुराइयों को दुर करना पड़ा।

By - M H Rabbani

(2) सामाजिक जीवन पर प्रभाव

- जाती प्रथा की कठोरता कम हुई।
- भाइचारा बढ़ा, समाजिक एकता में वृद्धि।
- मांसाहारी भोजन लेने की प्रवृत्ति में कमी।
- अहिंसावादी विचारों के प्रसार से समाज मे शांति।

(3) सांस्कृतिक प्रभाव :-

- अशोक, हर्ष और कनिष्क जैसे राजाओं ने संपूर्ण देश को सुंदर विहारों, स्तूपों, मठों, मूर्तियों और स्तंभों से सजा दिया।
- जनसाधारण की भाषा प्राकृत में बौद्ध धर्म की हजारों पुस्तकें लिखी गई। इसप्रकार जनसाधारण की भाषा में एक नयी साहित्य का विकास हुआ।
- बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ भारतीय संस्कृति का भी दुनिया में प्रसार हुआ।

(4) राजनीतिक जीवन पर प्रभाव

- राजनीतिक एकता की भावना का विकास।
- विश्व बंधुत्व की भावना का प्रचार-प्रसार।
- अहिंसा की भावना ने युद्ध की भावना को कम कर दिया।
- अत: लोग इतने कमजोर हो गये कि वे अपनी स्वतंत्रता की रक्षा न कर सकें गुलाम बना दिये गये।

महायान बौद्ध मत का विकास व विशेषता

(i) प्रारम्भिक बौद्ध मत में निब्बान के लिए व्यक्तिगत प्रयास को विशेष महत्त्व दिया गया।
(ii) बुद्ध को भी एक मनुष्य समझा जाता था जिन्होंने व्यक्तिगत प्रयास से प्रबोधन और निब्बान प्राप्त किया।
(iii) धीरे-धीरे इन विचारों में परिवर्तन आया और एक मुक्तिदाता की कल्पना उभरने लगी। यह विश्वास किया जाने लगा कि वे मुक्ति दिलवा सकते थे।
(iv) इससे बोधिसत्त की अवधारणा भी उभरने लगी। बोधिसत्तों को परम करुणामय जीव माना गया जो अपने सत्कार्यों से पुण्य कमाते थे। वे पुण्य का प्रयोग दूसरों की सहायता के लिए करते थे।
(v) बुद्ध और बोधिसत्तों की मूर्तियों की पूजा इस परंपरा का महत्त्वपूर्ण अंश बन गई।
(vi) चिंतन की इस परंपरा को महायान के नाम से जाना गया। जिन लोगों ने इन विश्वासों को अपनाया उन्होंने पुरानी परपरा को हीनयान नाम से सम्बोधित किया।

थेरवादी

👉 महायान के अनुयायी दूसरी बौद्ध परंपराओं के समर्थकों को हीनयान के अनुयायी कहते थे लेकिन पुरातन परंपरा के अनुयायी स्वयं को थेरवादी कहते थे।
👉 इसका मतलब है कि वे लोग जो पुराने प्रतिष्ठित शिक्षकों (जिन्हें थेर कहते थे) के बताए रास्ते पर चलते थे, थेरवादी कहलाते थें।
- बुद्ध की उपमाता महाप्रजापति गोतमी संघ में आने वाली पहली भिक्खुनी थीं ।
- कई स्त्रियाँ जो संघ में आई, वे धम्म की उपदेशिकाएँ बन गई। आगे चलकर वे थेरी बनी जिसका मतलब है ऐसी महिलाएँ जिन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया हो।

बुद्ध के अनुयायी

👉 बुद्ध के अनुयायी कई सामाजिक वर्गों से आए।
👉 इनमें राजा, धनवान, गृहपति और सामान्य जन कर्मकार, दास, शिल्पी, सभी शामिल थे।
👉 एक बार संघ में आ जाने पर सभी को बराबर माना जाता था क्योंकि भिक्खु और भिक्खुनी बनने पर उन्हें अपनी पुरानी पहचान को त्याग देना पड़ता था।

बौद्ध संघ के संचालन की पद्धति

👉 संघ की संचालन पद्धति गणों और संघों की परम्परा पर आधारित थी।
👉 अतः निर्णय साधारणतया एकमत से होता था।
👉 सहमति न होने पर निर्णय मतदान द्वारा किया जाता था।

अजनता की गुफा

👉 अपनी चित्रकारी के लिए विश्व प्रसिद्ध
👉 गुफा की दिवारों पर नीचे से ऊपर तक यहाँ तक कि छत तक खड़ीया मिट्टी, चुना और भूसा के मिश्रण के लेप पर चित्रकारीयाँ की गई हैं।
👉 **चित्रकारी का विषय :-**
(a) बुद्ध और बोद्धिसत्व
(b) सजावट के नमुने फूल, वृक्ष, पत्तीयों, पशु, पक्षी

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By - M H Rabbani

बुद्ध के द्वारा सिगल (अमीर गहपति) को सलाह

सुत्त पीटक के अनुसार मालिक का कर्तव्य

👉 **मालिक को अपने नौकरों और कर्मचारियों की पाँच तरह से उनकी देखभाल करनी चाहिए-**

(i) उनकी क्षमता के अनुसार उन्हें काम देना
(ii) भोजन और मजदूरी देना
(iii) बीमार पड़ने पर उनकी परिचर्या करना
(iv) उनके साथ सुस्वादु भोजन बाँटना, और
(v) समय-समय पर छुट्टी देना ।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

सुत्त पीटक के अनुसार गृहस्थ का कर्तव्य

By - M H Rabbani

👉 **गृहस्थ के द्वारा श्रमणों (सन्यासी)और ब्राह्मणों की देखभाल**

(i) पाँच प्रकार से देखभाल करना चाहिए
(ii) कर्म, वचन और मन से अनुराग द्वारा (iil)उनके स्वागत में सदैव घर खुले रखना
(iv) उनकी दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताएँ पूरी करना ।

कमलदल एवं हाथियों के मध्य स्त्री की प्रतिमा

इस संबंध में इतिहासकारों के भिन्न-भिन्न मत है :-

(a) बुद्ध की माँ माया की मूर्ती
(b) प्रसिद्ध देवी गजलक्ष्मी की मूर्ति। गजलक्ष्मी सौभाग्य को लाने वाली देवी थीं जिनहें अक्सर हाथियों के साथ जोड़ कर देखा जाता था।
(c) यह भी हो सकता है कि कुछ उपासक इसे माया और गणलक्ष्मी दोनों से जोड़कर देखते थे।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

(a) धीरे-धीरे यह एक जटील धर्म, बनता गाया की जिससे मूर्तिपूजा और कई सारे कर्मकाण्ड शामिल हो गये।
(b) दो संप्रदायों में बंट जाना ।
(c) राजकीय प्रश्रय मिलना बंद हो जाना।
(d) बौद्ध भिक्षुओं का नैतिक पतन |
(e) हिन्दु धर्म में भक्ति परंपरा के विकास के बाद वापिस हिंदू धर्म में शामिल होना ।
(f) शंकराचार्य और रामानुजन जैसे विद्वानों द्वारा हिन्दू धर्म का प्रचार प्रसार ।
(g) राजपूतों के उत्थान और पश्चिम से आए मुस्लमानों के हमले ने इनके अहिंसक सिद्धांत को निरर्थक साबित कर दिया।

बुद्ध की उपस्थिति प्रतिकों के रूप में

👉 मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में न दिखाकर उनकी उपस्थिति प्रतीकों के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया।

👉 उदाहरण:-

- रिक्त स्थान बुद्ध के ध्यान की दशा (चित्र 1)
- स्तूप (चित्र 2) महापरिनिब्बान के प्रतीक
- चक्र (चित्र 3) भी बुद्ध द्वारा सारनाथ में दिए गए पहले उपदेश का प्रतीक

महावीर जैन

- जन्म 599 ई० पू० कुंडग्राम वैशाली
- मृत्यु 527 ई०पू० पावा (राजागृह)
- पिता सिद्धार्थ क्षत्रीय कुल के प्रमुख
- माता त्रिशला लिच्छी वंश के नेता चेतक की बहन
- बचपन में यशोदा के साथ विवाह, पुत्री
- 30 वर्ष की आयु में सन्यास, 12 वर्ष तपस्या
- तीर्थंकर 24वें
  - प्रथम ऋषभ देव
  - 23 वें पार्श्वनाथ
- विदेह, मगध और अंग तक जैन धर्म को फैला दिया।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By - M H Rabbani

महावीर जैन की शिक्षाएँ

👉 महावीर की शिक्षाओं तथा उनके सिद्धांतो को ही जैन मत का नाम दिया गया है।

👉 प्रमुख शिक्षाएं निम्नलिखित है :-

(1) अंहिसा : -

- इस मत के अनुसार किसी भी जीव धारी को कष्ट नही दिया जाना चाहिए।
- यह सिद्धांत हिन्दू धर्म में बढ़ती हुई पशु बालि की प्रतिक्रिया के रूप में था।
- इसीलिए जैन लोग प्राय: नंगे पाव चलते है, मुँह पर पट्टी बांधे रहते हैं और पानी भी छान कर पिते है ताकी किसी जीव की हत्या न हो जाए।
- महावीर पत्थर, चट्टान और जल में भी जीवन मानते थे। अर्थात् उनके अनुसार संपूर्ण विश्व प्राणवान है। इस प्रकार जीवों के प्रति अहिंसा जैन दर्शन का केन्द्रबिंदु है।

(2) घोर तपस्या और आत्मत्याग :-

- कर्म के चक्र से मुक्ति संसार के त्याग से ही संभव है। इसीलिए मुक्ति के लिए विहारों में निवास करना जैन धर्म में एक अनिवार्य नियम बन गया।
- जैन लोग भूखे रहकर प्राण त्यागने और घोर तपस्या पर बल देतें हैं। ये लोग अपनी इन्द्रीयो पर नियंत्रण के लिए अपने आप को शारिरिक कष्ट देते हैं।

(3) जाति प्रया में अविश्वास :-

- जाति - पाति के सिद्धांत और उँच - निच को नही मानते।
- इनके अनुसार जैन मत के सिद्धांत मे विश्वास रखने वाले सभी व्यक्ति एकसमान हैं ।

(4) पुर्नजन्म और कर्म सिद्धांत मे विश्वास :-

- ये लोग हिन्दू और बौद्ध धर्म की तरह पुर्नजन्म में विश्वास रखते है।
- इनके अनुसार व्यक्ति जिस प्रकार का कर्म करता है उसी तरह का पुर्नजन्म पाता है।।

(5) ईश्वर में अविश्वास :-

- महावीर ईश्वर के अस्तित्व को नही मानते थे वे ये भी नही मानते थे कि संसार को बनाने वाला ईश्वर है।

(6) यज्ञ, बलि और कर्मकांड में अविश्वास :-

- यज्ञ, बलि और अन्य प्रकार के ब्राह्मणीय कर्मकांडो का ये विरोध करते थें और वेदों को भी नही मानते थें।

(7) मोक्ष की प्राप्ति :-

- इनके जीवन का लक्ष्य हिन्दुओ की तरह मोक्ष की प्राप्ति है।
- इनके अनुसार निर्वाण की प्राप्ति के लिए सम्यक विश्वास, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र त्रिरतनो पर चलना आवश्यक है।

(8) 24 श्रीर्थकरों की पुजा :-

- जैन लोग ब्राह्मणों के देवी-देवताओ के स्थान पर अपने 24 तीर्थंकरों का आदर तथा उनकी पूजा करते हैं।

जैन मत का सीमित प्रसार

👉 भारत मे विशेषकर मथुरा, मालवा, गुजरात तथा दक्षिण मे जैन धर्म का तेजी से प्रसार हुआ लेकिन बौद्ध धर्म की तरह यह अन्य देशो मे न फैल सका।

👉 भारत में भी इसे बौद्ध धर्म की तुलना मे कम पंसद किया गया।

👉 बौद्ध धर्म की तरह इसके लोकप्रिय न होने के निम्नलिखित कारण थें :-

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

(1) प्रचार-प्रसार का अभाव :-

- जैन मत के प्रचारको ने इस मत के प्रचार - प्रसार पर ज्यादा ध्यान नही दिया।

(2) धोर तपस्या पर बल :-

- इस मत में भूखे प्यासे रह कर मर जाना, कठोर तपस्या करना शुभ माना जाता है।
- ये कार्य आम लोगो के लिए अति कठिन है, इसलिए बहुत से लोग अनुयायी न बन सके।

(3) अहिंसा का अतिवादी रूप :-

- ये लोग पूर्णत: अहिंसक है और किसी भी जीव हत्या का विरोध करते हैं।
- जैसे:- शरीर के किसी अंग मे कीड़ा पड जाए तो मर जाना अच्छा है लेकिन उन कीटाणुओं को को नही मारना है ।

(4) राजकीय सहायता का अभाव :-

- जैन मत का अधिक न फैलने का एक कारण यह भी था कि उसे इतनी राजकीय सहायता न मिली जितनी बौद्ध मत को मिली।
- अजात शत्रु, विमविसार, राजा खड़वेल जैसे कुछ राजाओ ने राजकीय सहायता जरूर दी लेकिन यह सहायता बहुत थोड़े से काल के लिए थी।

🔴 **निष्कर्ष :-** उपरोक्त कारणों से जैन धर्म उतना लोकप्रिय नहीं हो सका जितना कि बौद्ध धर्म।

जैन धर्म में विभाजन

👉 चंद्रगुप्त मौर्य का शासन काल, भयंकर आकाल

👉 जैन गुरु भद्रबाहु कुछ अनुयायियों के साथ दक्षिण भारत चले गये। इनकी अनुपस्थिति में स्थूलभद्र को लोगों ने अपना नेता चुन लिया।

🔴 स्थूलभद्र के नेतृत्व में - (a) अंग नामक ग्रंथ की रचना
(b) कठोर नियमों में परिवर्तन
(c) वस्त्र विहीन रहने के स्थान पर सफेद वस्त्र

👉 12 वर्ष बाद जब भद्रबाहु वापस आएं तो इन परिवर्तनों को लेकर मतभेद पैदा हो गया और जैन धर्म दो शाखाओं मे बँट गया।

(i) दिगाम्बर
- प्राचीन जैन धर्म को मानने वाले
- वस्त्रविहीन
- नेता भद्रबाहु

(ii) श्वेतांबर
- नवीन जैन धर्म को मानने वाले
- सफेद वस्त्र
- नेता स्थूलभद्र

जैन धर्म का भारत के लोगों पर प्रभाव

(1) धार्मिक जीवन पर प्रभाव

- यज्ञ, हवन और पशु बली का विरोध
- अत: दबाब में हिंदू धर्म में भी सुधार

(2) सामाजिक जीवन पर प्रभाव

- वर्ण व्यवस्था, उच्च-नीच, जाती-पाती, छुआ -छूत का विरोध
- समाज सेवा के लिए लोग प्रेरित

(3) सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव

- सुंदर जैन मंदिर, धर्मशाला
- मूर्तियों का निर्माण
- भारतीय वास्तुकला की उनती

(4) राजनीतिक जीवन पर प्रभाव

- अहिंसा के सिद्धांत पर बल
- शांति की भावना प्रबल हुई युद्ध क्षमता में कमी आयी
- लम्बे समय तक हम गुलामी के शिकार रहें ।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By- M H Rabbani

जैन साधु और साध्वी के पाँच व्रत

- किसी की हत्या न करना।
- चोरी न करना।
- असत्य न बोलना।
- ब्रह्मचार्य (अमृषा) का पालन करना।
- धन का संग्रह न करना।

वेदों की श्रेष्ठता पर बुद्ध और महावीर स्वामी के विचार

- वेदों की श्रेष्ठता को नहीं मानते थें।
- मोक्ष प्राप्ति के लिए वेदों का ज्ञान आवश्यक नहीं।
- वर्णव्यवस्था और जाती प्रथा पर विश्वास नहीं
- मनुष्य में भेद-भाव का आधार गुण होना चाहिए न कि जाति।
- न ही ब्राह्मणों की श्रेष्ठता में विश्वास और न ही संस्कृत भाषा में।

सम्प्रदाय विशेष के समर्थन में वृद्धि या कमी

👉 समकालीन बौद्ध ग्रंथों में 64 संप्रदायों या चिंतन परंपराओं का वर्णन मिलता है।
👉 विभिन्न परंपराओं के गुरू के बीच कुटागारशालाओं (नुकीली छत वाली झोपड़ी) में शास्त्रार्थ होता था।
👉 पराजित गुरू अपने शिष्यों के साथ विजेता की परंपरा को अपना लेता था।

भारत में पौराणिक हिन्दू धर्म का उदय 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व

(1) मुक्तिदाता

- बौद्ध धर्म वालों ने महात्मा बुद्ध को मुक्तिदाता मान कर पूजा एवं अर्चना शुरू कर दी।
- इसी प्रकार हिन्दू धर्मावलम्बियों ने विष्णु एवं शिव को मुक्तिदाता मान कर उनकी पूजा अर्चना शुरू कर दी।

(2) वैष्णववाद

- विष्णु की पूजा एवं अर्चना की पद्धति को वैष्णववाद कहा गया।
- विष्णु को मानने वाले वैष्णवमत के कहलाएँ।
- इसके अनुसार समय- समय पर पापियों का नाश करने के लिए भगवान विष्णु का दशावतार ।

(3) शैववाद

- शिव की पूजा एवं अर्चना की पद्धति को शैववाद कहा गया।
- शिव को मानने वाले शैवमत के कहलाएँ।
- इसके अनुसार शिव सृष्टि के रक्षक नहीं बल्कि संहारक हैं ।
- शिव की पूजी एक मुखी लिंग एवं चतुरमुखी लिंग के रूप में की जाने लगी ।
- उनके साथ पत्नी पावर्ती और पुत्र कार्तीकेयन और श्री गणेश की भी पूजा होने लगी।

निष्कर्ष :-

👉 राजकीय प्रश्रय के कारण दोनों परंपराओं का तेजी से प्रसार हुआ।
👉 सबसे ज्यादा प्रसार गुप्त काल में ।
👉 देवगढ़ (UP) शेषनाग पर सोती हुई विष्णु की प्रतिमा अद्वितीय है।

गुप्त शासन और वैष्णव मत

(a) गुप्त, शासक वैष्णव मत के अनुयायी थें जिनके संरक्षण में इस मत का खुब प्रसार हुआ ।
(b) विष्णु के प्रति लोगों में बहुत श्रद्धा थी। गुप्त शासकों ने इनकी अनेक मूर्तियों का निर्माण करवाया। बाद में इनकी पत्नी लक्ष्मी की भी पूजा होने लगी।
(c) इस काल में **अवतारवाद के सिद्धांत का विकास** हुआ। बराह, मत्स्य, राम और कृष्ण इत्यादि प्रमुख अवतार ।
(d) गुप्त शासकों ने **परमभागवत की उपाधी** धारण की।
(e) समुद्रगुप्त ने सिक्कों पर **गरुड़ का चित्र** अंकित करवाया।
(8) चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने **विष्णु ध्वज** की स्थापना की।
(9) स्कंदगुप्त के सिक्कों पर विष्णु तथा लक्ष्मी के चित्र अंकित हैं।

प्रारम्भिक मंदिरों की विशेषता

(a) प्रारंभ में चौरस कक्ष के रूप जिसे गर्भगृह कहा जाता था।
(b) गर्भगृह में मूर्ति की स्थापना
(c) गर्भगृह में प्रवेश के लिए एक दरवाजा
(d) भविष्य में गर्भगृह के ऊपर ऊंची-ऊंची संरचनाएँ (शिखर) बनायी जाने लगी।
(e) चारदिवारी पर भित्ति चित्र का निर्माण ।
(f) बाद में विशाल सभास्थल तथा तोरण द्वार भी बनाये जाने लगे।
👉 प्रारंभ में कुछ मंदिर पहाड़ियों को काटकर खोखला कर गुफा के रूप में भी बनाये जाते थे।
👉 सबसे पुरानी कृत्रिम गुफा असोक के आदेश से आजीविक संप्रदाय के संतों के लिए निर्मित की गई थी।
👉 कैलाशनाथ का शिव मंदिर (8वीं शताब्दी)

नयी धार्मिक परम्पराएँ

(i) महायान शाखा
(ii) पौराणिक हिन्दू धर्म का उदय-वैष्णववाद, शैववाद
(iii) मन्दिरों का निर्माण
(iv) प्रारम्भिक मंदिर-
  (क) एक चौकोर कमरे का रूप
  (ख) कृत्रिम गुफा का रूप ।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By- M H Rabbani

स्तूप

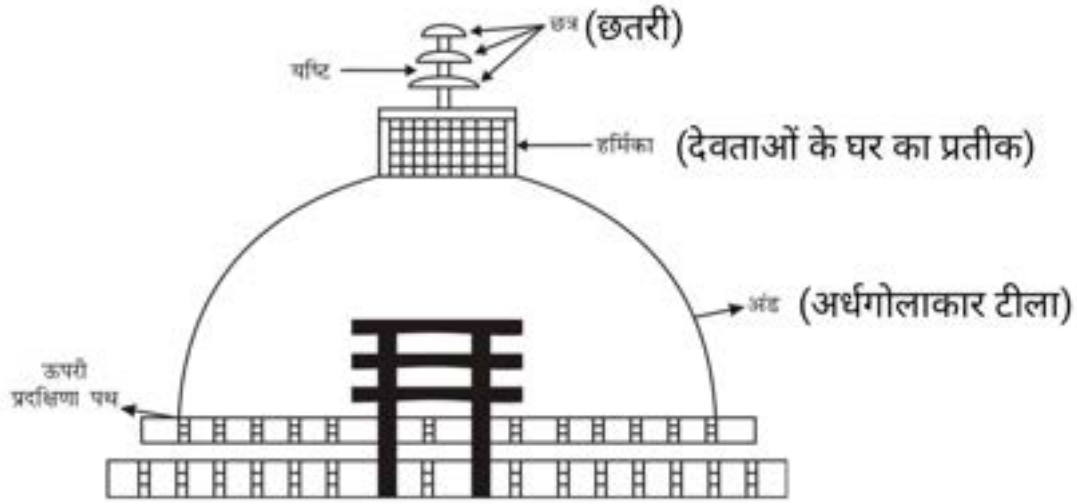

- प्राचीन काल → विशेष वनस्पति, अनोखी चट्टान, आश्चर्यचकित करने वाली सुंदरता → ऐसे स्थानों को पवित्र मानते थें

ऐसे स्थानों पर छोटी सी वेदी बनी होती थी जिन्हें चैत्य कहा जाता था।

- शव को जलाने के पश्चात शरीर के कुछ अवशेष को टीले के नीचे दबा दिया जाता था जिन्हें चैन्य कहा जाता था।

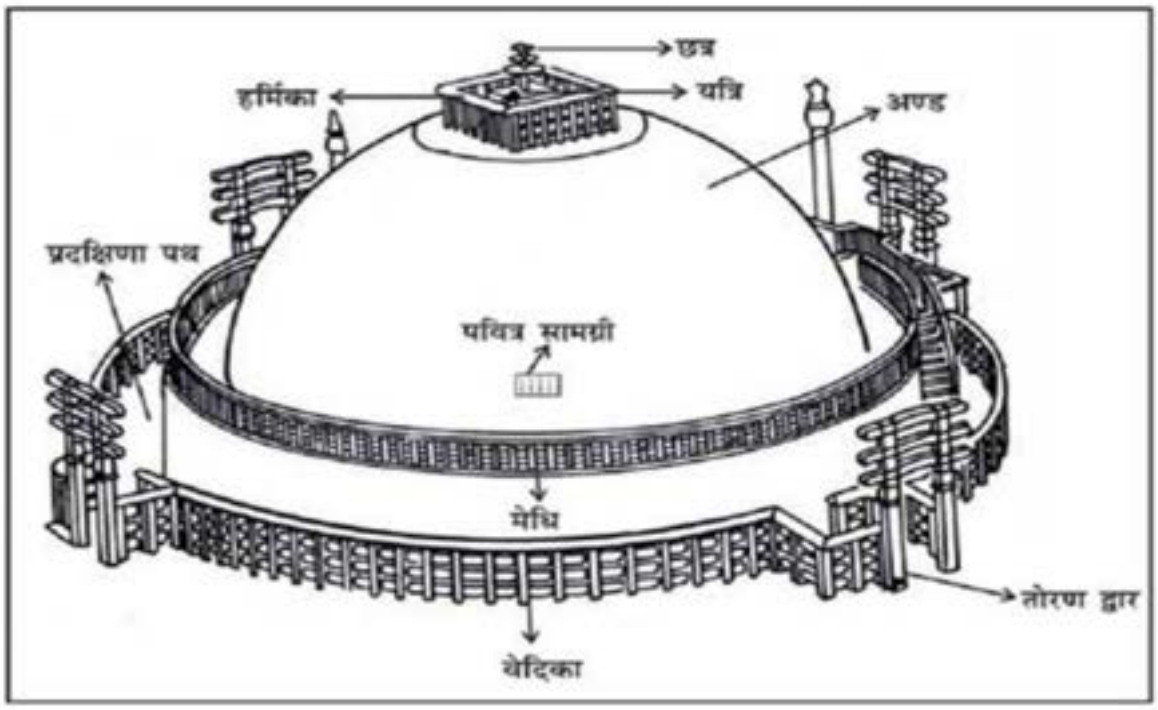

- टीले के चारों ओर वेदिका होती है जो पवित्र स्थल को समान्य दुनिया से अलग करती है।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By- M H Rabbani

स्तूप का निर्माण क्यों ?

- स्तूप को संस्कृत भाषा में टीला कहा जाता है जिनके अंदर बुद्ध के अवशेष, अस्थियाँ तथा उनके द्वारा प्रयुक्त समान दबा होता है।
- पवित्र अवशेषों को दबा कर स्तूप बनाने की परंपरा पहले से थी लेकिन इसे बौद्ध धर्म से पहचान मिली।
- असोकावदान नामक एक बौद्ध ग्रन्थ के अनुसार असोक ने बुद्ध के अवशेषों के हिस्से हर महत्त्वपूर्ण शहर में बाँट कर उनके ऊपर स्तूप बनाने का आदेश दिया।
- ईसा पूर्व दूसरी सदी तक भरहुत, साँची और सारनाथ जैसी जगहों पर स्तूप बनाए जा चुके थे।

स्तूप का निर्माण कैसे ?

- स्तूप की वेदिकाओं और स्तम्भों से उनके निर्माण के विषय में जानकारी मिलती है।
- अभिलेखों से दानी पुरुष और महिलाओं आदि के नामों की जानकारी प्राप्त होती है।
- दान में एकत्रित धन से स्तूप का निर्माण हुआ।
- दानकर्ता :- शासक, शिल्पकर्मी, व्यवसायी
- भिक्षु और भिक्षुनियों द्वारा एकत्रित किये गयें दान का प्रयोग भी स्तूप निर्माण में हुआ।

स्तूप की संरचना

(1) स्तूप (संस्कृत अर्थ टोला) का जन्म एक गोलार्ध लिए हुए मिट्टी के टीले से हुआ जिसे बाद में अंड कहा गया।

(ii) धीरे-धीरे इसकी संरचना में कई चौकोर और गोल आकारों का संतुलन बनाया गया।

(iii) अंड के आकार के ऊपर एक हर्मिका होती थी। यह छज्जे जैसा ढाँचा देवताओं के घर का प्रतीक था।

(iv) हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहते थे जिस पर अक्सर एक छत्री लगी होती थी।

(v) टीले के चारों ओर एक वेदिका होती थी जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती थी।

(VI) साँची और भरहुत के स्तूपों में पत्थर की वेदिकाएँ और तोरणदार हैं। तोरणद्वारों पर नक्काशी की गई थी।

(vii) बाद में स्तूपों पर अलंकरण और नक्काशी की जाने लगी। अमरावती और पेशावर में शाहजी की ढेरी में स्तूपों में ताख और मूर्तियाँ उत्कीर्ण करने के उदाहरण हैं।

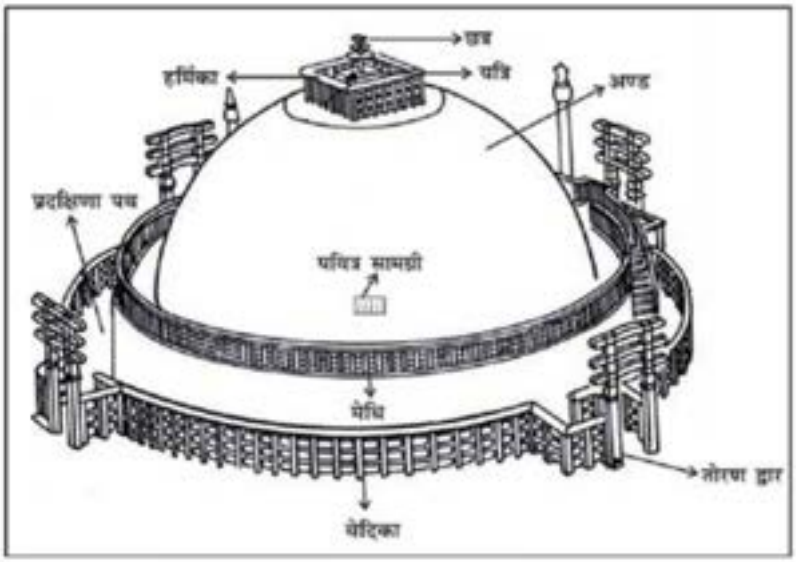

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

By- M H Rabbani

स्तूप बनाने की परम्परा की शरुआत

सूत्तपीटक में बुद्ध और शिष्य आनंद के बीच वार्तालाप से निम्न जानकारी मिलती है :-

(a) परिनिर्वाण से पहले आनंद ने पुछा कि हम तथागत के अवशेषों का क्या करेंगे?

(b) बुद्ध ने जवाब दिया कि तथागत के अवशेषों को विशेष आदर देकर खुद को भलाई के कामों से मत रोको, धर्मोत्साही बनो।

(c) आनंद के पुनः आग्रह करने पर कहा कि चार महापथों के चौक पर धूप (स्तूप) बनवाना चाहिए जहाँ शिष झुकाने से सुख और शांति मिलेगी।

(d) इस प्रकार बुद्ध के आदेश पर उनके शिष्यों ने स्तूप बनवाना शुरू कर दिया।

👉 बुद्ध के 8 में से 7 स्तूपों के अवशेष को असोक ने खुदवाकर अपने साम्राज्य के अनेक भागों में स्तूप बनवायें। साँची के स्तूप की आधारशीला भी असोक ने रखी थी।

👉 स्तूप निर्माण में सातवाहनों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

साँची का स्तूप

- साँची में तीन स्तूप हैं जिन्हें असोक ने बनवाया था।
- इनमें सबसे बड़ा स्तूप **भोपाल के कानखेड़ा नामक गाँव** के पास है।
- इसे महात्मा बुद्ध के अवशेषों पर बनाया गया जो 77.5 फिट ऊंचा है और इसका व्यास 11.5 फिट है।
- इसके चार प्रवेश द्वार हैं और इसके उपर एक छत्री बनी हुई है।

साँची स्तूप की संरचनात्मक विशेषताएं

(i) साँची और भरहुत के आरंभिक स्तूप अलंकरण के बिना है।

(ii) इनमें पत्थर की वेदिकाएँ और तोरणद्वार है।

(iii) तोरणद्वार पर नक्काशी का काम।

(iv) आकांश में सूर्य के पथ का अनुकरण करते हुए उपासक पूर्वी द्वार से प्रवेश करके दक्षिणव्रत परिक्रमण करते थे।

(v) बाद के स्तूपों के टीले पर भी अलंकरण किया जाने लगा। अब स्तूप ईंट और पत्थर से बनाये जाने लगें।

स्तूप - मूर्तिकला

(a) साँची उत्तरी तोरणद्वार की मूर्तिकला

- प्रथम दृष्टांत घास-फूस की झोपड़ी, पेड़ पौधा वाला ग्रामीण दृश्य ।
- परंतु बसांतर जातक के अनुसार यह एक ऐसा दृश्य है जिसमें एक राजकुमार सबकुछ ब्राह्माण को दान में देकर अपने पत्नी और बच्चों को साथ लेकर जंगल में चला गया है।

(b) महात्मा बुद्ध को प्रतिक के रूप में दिखाना

- रिक्त स्थान - बुद्ध के ध्यान की अवस्था
- स्तूप - महापरिनिब्बान का प्रतीक
- चक्र - सारनाथ में बुद्ध के द्वारा दिये गये पहले उपदेश का संकेत
- वृक्ष - बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति की अवस्था

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By- M H Rabbani

(c) शालभंजिका की मूर्ति

- तोरणद्वार के किनारे एक पेड़ को पकड़कर झुलती हुई।
- लोक परंपरा में यह एक शुभ प्रतिक मानी जाती थी इसके छूने से वृक्षों में फुल खिल उठते थें और फल लगने लगते थे।

- इससे ज्ञात होता है कि बौद्ध अनुयायियों ने बुद्ध पूर्व और बाद की विश्वास एवं परंपराओं से बौद्ध धर्म को समृद्ध किया

(d) साँची की मूर्ति में जातक का चित्रण

- हांथी शक्ति का प्रतीक।

निष्कर्ष :-

👉 चूंकि स्तूप- मूर्तिकला में बौद्ध साहित्य और जातक कथाओं को चित्रण किया गया है। अत: साँची की मूर्तिकला को समझने में बौद्ध साहित्य के ज्ञान की जरूरत है।

👉 यही कारण था कि जेम्स फर्ग्यूसन जैसे कला आलोचक और इतिहासकार, साँची को पेड़ और सर्प पूजा केन्द्र समझ बैठे थें।

साँची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल के बेगमों की भूमिका

साँची के स्तूप की खोज

- **1818 इ. में**
- तीन तोरणद्वार खड़े थे।
- चौथा तोरणद्वार वहीं गिरा हुआ था
- टीला भी अच्छी खासी स्थित में था।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

साँची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की दो शासक शाहजहाँ बेगम और सुल्तान जहाँ बेगम का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

(a) पहले फ्रांसीसियों ने बाद में अंग्रेजों ने साँची के पूर्वी तोरणद्वार को अपने अपने देश ले जाने की कोशिश की परंतु भोपाल की बेगमों ने उन्हें स्तूप की प्लॉस्टर प्रतिकृतियों संतुष्ट कर दिया।

(b) शाहजहाँ बेगम और उनकी उत्तराधिकारी सुल्तानजहाँ बेगम ने इसके रखरखाव के लिए धन का अनुदान किया।

(c) सुल्तानजहाँ बेगम ने साँची के स्तूप के निकट एक संग्राहलय और अतिथिशाला निर्माण किया।

(d) यहीं रहते हुए जॉन मार्शल ने अपना शोध पूरा कर साँची पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखा जिसका प्रकाशन सुल्तान बेगम के अनुदान से हुआ। अत: इसे जान मार्शल ने सुल्तान जहाँ बेगम को समर्पित कर दिया

(e) बेगमों के द्वारा समय-समय पर लिये गए विवेकपूर्ण निर्णय ने साँची के स्तूप को उजड़ने से बचा दिया।

अमरावती का स्तूप

खोज

- **1796 ई0 में, गंटूर (AP)**
- स्थानीय शासक द्वारा मंदिर निर्माण के लिए खुदाई में स्तूप के अवशेष प्राप्त हुए।

अमरावती स्तूप के नष्ट होने के कारण :-

(a) इसकी खोज सांची से पहले हुई थी, तबतक पुरातत्विद इस बात के महत्व को नहीं समझ पाये थे कि किसी पुरास्थल के अवशेष को उठाकर ले जाने की बजाय खोज हुए स्थान पर ही संरक्षित करना जरूरी होता है।

(b) अमरावती के उत्कीर्ण पत्थरों को अलग-अलग स्थानों पर लोग लेकर चले गये।

(c) कुछ पत्थरों को कलकता में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल पहुँचाया गया तो, कुछ मद्रास में इंडिया ऑफिस तो, कुछ लन्दन।

(d) मूर्तियों को अपने बाग और घर को सजाने के लिए अंग्रेज अधिकारी लेकर चले जाते थे।

(e) अमरावती के अवशेषों का प्रयोग मंदिर निर्माण के लिए भी किया गया।

अमरावती का महाचैत्य आज केवल एक छोटे से टीले के रूप में रह गया है जिसका सारा गौरव खत्म हो चुका है।

By- M H Rabbani

● यद्यपि पुरातत्ववेत्ता एच.एच.कोल द्वारा विरोध किया गया। वह संग्रहालयों में मूर्तियों की प्लास्टर प्रतिकृतियाँ रखने तथा असली कृतियाँ खोज की जगह पर ही रखने के पक्ष में थे, परन्तु वह अधिकारियों को इसके लिए राजी नहीं कर सके। परिणामस्वरूप अमरावती स्तूप को बचाया नहीं जा सका। परन्तु उनके सुझाव को साँची के लिए मान लिया गया जिसके फलस्वरूप साँची का स्तूप बच गया।

स्तूप - पत्थर में गढ़ी कथाएँ

- बौद्ध स्तूप पत्थर में गढ़ी कथाएँ हैं।
- उदाहरणतया साँची की मूर्तिकला में एक दृश्य वेसांतर जातक से लिया गया है।
- देखने में यह फूस की झोपड़ी और पेड़ों का दृश्य लगता है परंतु वास्तव में यह कहानी एक ऐसे दानी राजकुमार की है जिसने अपना सब कुछ एक ब्राह्मण को सौंप दिया और स्वयं अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जंगल में रहने चला गया।

प्रश्न- निम्नलिखित को क्रम के अनुसार लिखिए-

(क) भोपाल की नवाब शाहजहाँ बेगम
(ख) उपनिषद
(ग) एच डी बारस्टो द्वारा शाहजहाँ बेगम की आत्मकथा का अनुवाद
(घ) अमरावती के अवशेष मिलना
(ङ) साँची की खोज
उत्तर- (ख) उपनिषद
(घ) अमरावती के अवशेष मिलना (1796)
(ङ) साँची की खोज (1818)
(क) भोपाल की शाहजहाँ बेगम (1868-1901)
(ग) एच डी बारस्टो द्वारा शाहजहाँ बेगम की आत्मकथा का अनुवाद

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
By- M H Rabbani

प्रश्न :- विश्व के मानचित्र पर उन इलाकों पर निशान लगाइए जहाँ बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ। उपमहाद्वीप से इन इलाकों को जोड़ने वाले जल और स्थल मार्गों को दिखाइए ।

1. चीन
2. मंगोलिया
3. कोरिया
4. जापान
5. म्यांमार
6. थाइलैंड
7. इंडोनेशिया

प्रश्न- भारत के राजनीतिक रेखा - मानचित्र पर बौद्ध धर्म के निम्न स्थान दर्शाएँ।

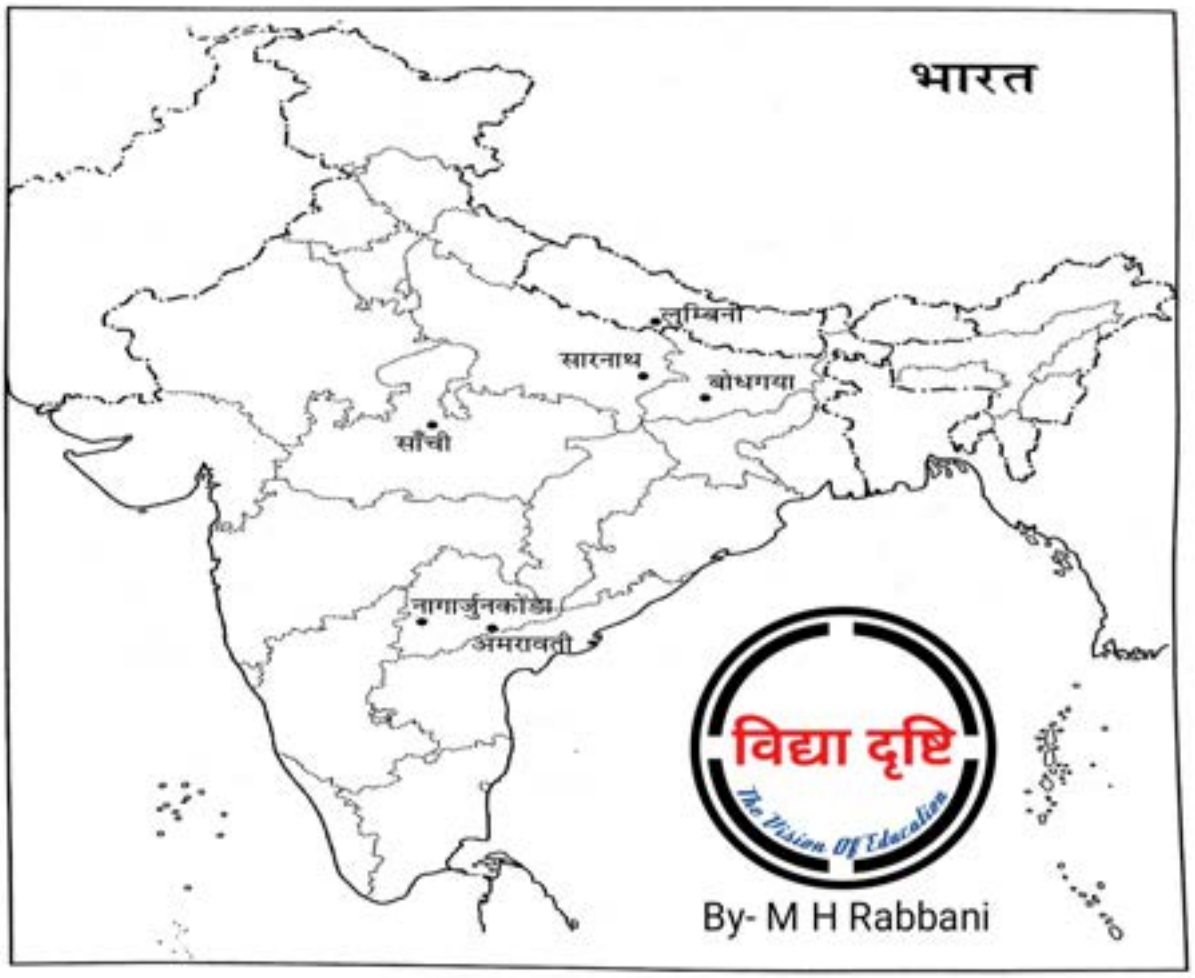

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- ताज-उल- इकबाल :- शाहजहाँ बेगम की आत्मकथा
- वेसली - वैशाली
- दीपवंश और महावंश - बौद्ध ग्रंथ
- उत्तराध्ययन सूत्र - जैन ग्रंथ
- संतचरित्र - संत की जीवनी, उस परंपरा के अनुयायीयों के विश्वास के बारे में जानकारी
- सिद्धार्थ - महात्मा बुद्ध
- थेरीगाथा - बौद्ध ग्रंथ सूत्तपीटक का अंश, महिलाओं की सामाजिक तथा अध्यात्मिक अनुभवों की जानकारी
- थेरी - ऐसी स्त्री जिसको निर्वाण प्राप्त हो चुका हो
- अशोकावादन - इस बौद्ध साहित्य के अनुसार असोक ने बुद्ध के अवशेषों के भाग हर महत्वपूर्ण नगर में वितरित कर उन पर स्तूप बनाने की आज्ञा दी।
- बोधिसत्व - बुद्ध के अच्छे कर्मों के कारण सबको मुक्ति
- थेरवादी - प्राचीन परंपरा (हिनयान) के अनुयायी

C-136A,Laxmipark, Near M S Memorial Public School, Nangloi, Delhi -110041